वैदिक विज्ञान की ओर.....

1

किसी राष्ट्र अथवा विश्व मानवता को यदि रेलगाड़ी मानें, तब उस देश व विश्व की शिक्षा पटरी के समान है, जिस पर ही वह राष्ट्र वा विश्व चला करता है। दुर्भाग्यवश हमारा देश एक ऐसी विदेशी शिक्षा पद्धति पर चल रहा है, जहाँ वैदिक सत्य सनातन धर्म (विज्ञान), राष्ट्रीयता, सदाचार, त्याग-तप, अहिंसा, सत्य, ईमानदारी, ब्रह्मचर्य, पारस्परिक भ्रातृत्व का कोई स्थान नहीं है। विज्ञान अपूर्णता, संदिग्धता, अनेकत्र मिथ्यावाद एवं व्यावसायिकता की छाया तले अनेक अनावश्यक व हानिकारक तकनीक का जनक बनकर सम्पूर्ण भूमण्डल के लिये संकट उत्पन्न करता जा रहा है। आज भौतिकी के क्षेत्र में ही अनेक प्रकार के परस्पर विरोधी सिद्धान्त फल-फूल रहे हैं और उनके अनुसंधान पर विश्वभर में खरबों डॉलर प्रतिवर्ष व्यय हो रहा है। कोई नहीं विचारता कि परस्पर विरोधी विचार कैसे विज्ञान का रूप ले सकते हैं? भोग-विलास के आमोद में डूबा मानव अपने क्षणिक सुखों की लालसा में राष्ट्र व संसार में अराजकता उत्पन्न कर रहा है।

उधर धर्म सत्य-विज्ञान, तार्किकता, निष्पक्षता व सार्वभौमिकता से अति दूर अंधविश्वास, मिथ्या रूढ़िवाद व पाखण्ड़ों से ग्रस्त होकर मानव के बुद्धि-विवेक का हरण कर रहा है।

ऐसी स्थिति में हमारा वैदिक विज्ञान एवं ऐतरेय ब्राह्मण का हमारा वैज्ञानिक भाष्य 'वेदविज्ञान-आलोक', जो शीघ्र ही संसार के सम्मुख आने वाला है तथा अभी मुद्रण कार्य चल रहा है, वर्तमान विज्ञान व धर्म दोनों को ही कल्याणकारी एवं सत्य मार्ग का अद्भुत् प्रकाश प्रदान करेगा। मानवता के पोषक, सच्चे राष्ट्रभक्तों एवं उच्च वैज्ञानिक प्रतिभा वालों के लिये यह ग्रन्थ अत्यन्त उपादेय होगा।

क्रमशः.....

-आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक